ISSN: 0973-0583

पूर्वी सिंहभूम जिला के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की शैक्षिक भूमिका: प्रारंभिक अध्ययन

सादिया तहसीन

रिसर्च स्कॉलर, पीएच-डी. शिक्षा विद्यालय, नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय, जमशेदपुर

प्रो0 राज कुमार नायक

संकायाध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय,पोखरी,जमशेदपुर

शोध-सार

इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और निजी विद्यालयों में शैक्षिक परिवेश, संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों तथा छात्रों और शिक्षकों की धारणा को गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टिकोण से समझना था। अध्ययन में 20 शिक्षकों और 50 छात्रों की भागीदारी रही, जिसमें प्रश्नावली, साक्षात्कार और प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। गुणात्मक विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी, बड़े कक्षा आकार और समयाभाव जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जबकि निजी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर भौतिक संरचना, तकनीकी साधन और व्यवस्थित शिक्षण वातावरण से युद्ध पाए गए। छात्रों के अनुभवों से यह संकेत मिला कि निजी विद्यालयों में सीखने का माहौल अधिक प्रेरक और आन्ददायक है, जबकि सरकारी विद्यालयों के छात्र अनुशासनहीनता और संसाधन-घाटे की ओर इशारा करते हैं। मात्रात्मक विश्लेषण में प्रतिशत और आवृत्ति वितरण के आधार पर प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि लगभग 60% सरकारी विद्यालयों ने संसाधनों को अपर्याप्त बताया, जबकि 70% निजी विद्यालयों ने संतोषजनक स्थिति की पुष्टि की। छात्रों में से 65% ने विद्यालयी वातावरण को सीखने हेतु प्रेरक माना, वहीं 35% ने बाधाओं पर प्रकाश डाला। शिक्षकों में से 55% ने प्रशिक्षण की कमी पर चिंता जताई, जबकि 45% ने प्रशासनिक सहयोग को अपर्याप्त बताया। ये आँकड़े शैक्षिक गुणवत्ता में असमानताओं की ओर इशारा करते हैं। समग्र व्याख्या से यह निष्कर्ष निकला कि शैक्षिक परिवेश केवल संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षक-छात्र संबंध, शिक्षण पद्धति और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं के लिए संकेत करता है कि शैक्षिक असमानताओं को कम करने हेतु संसाधनों का समान वितरण, नियमित शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यालयी वातावरण का सुदृढ़ीकरण आवश्यक है। इस प्रकार, यह पायलट अध्ययन भविष्य में विस्तृत शोध और शैक्षिक नीति निर्माण के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करता है।

शब्दकुँजी : असमानताओं, शिक्षण पद्धति, सामाजिक-सांस्कृतिक,भावनात्मक

Received : 10/6/2025 **Acceptance : 25/6/2025**

1. प्रस्तावना

शिक्षक समाज के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला व्यक्तित्व है। वह केवल एक अध्यापक नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, दार्शनिक और मित्र के रूप में बच्चों के जीवन को दिशा प्रदान करता है। कहा जाता है कि बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं और इस भविष्य को आकार देने का दायित्व शिक्षक के कंधों पर टिका होता है। जब हम व्यक्तित्व विकास की बात करते हैं, तो यह केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसमें बच्चों का मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास भी सम्मिलित होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक का योगदान सर्वोपरि माना जाता है, क्योंकि विद्यालय वह स्थान है जहाँ बच्चा परिवार से बाहर निकलकर समाज से जुड़ता है और अपनी क्षमताओं को निखारता है।

विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ जटिल हों, वहाँ शिक्षक की भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण तथा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। झारखंड का पूर्वी सिंहभूम जिला इसी दृष्टि से एक अनूठा उदाहरण है। यह जिला दक्षिण-पूर्वी झारखंड में स्थित है और यहाँ की भौगोलिक व सामाजिक संरचना विविधतापूर्ण है। यहाँ की जनसंख्या में आदिवासी समुदाय का विशेष योगदान है,

साथ ही ओबीसी, अनुसूचित जाति तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की संख्या भी अधिक है। इन परिस्थितियों में बच्चों का शैक्षिक स्तर प्रायः अपेक्षित स्तर से कम होता है और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

इस जिले में विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा का प्रसार तो हो रहा है, परंतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यक्तित्व विकास को लेकर अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। बच्चों के लिए घर का वातावरण अक्सर अध्ययन और व्यक्तित्व निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं होता। ऐसे में विद्यालय और शिक्षक ही वह आधार बनते हैं, जो बच्चों को आत्मविश्वास, जीवन कौशल, अनुशासन और समाजोपयोगी गुण सिखाते हैं। शिक्षक यहाँ केवल ज्ञान नहीं बाँटते, बल्कि बच्चों के भीतर सकारात्मक सोच, आत्मनिर्भरता और समाज से जुड़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पूर्वी सिंहभूम जैसे सामाजिक और आर्थिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका केवल शैक्षिक नहीं बल्कि जीवनोपयोगी भी है। उनके प्रयास ही यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चे न केवल पढ़ाई में कुशल बनें बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व से परिपूर्ण होकर समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बन सकें।

सम्बंधित साहित्य

1. शिक्षक का समग्र व्यक्तित्व-निर्माण में सिद्धांतात्मक योगदान : कई शैक्षिक लेखों और समीक्षाओं में यह धारणा समर्थन पाती है कि शिक्षक केवल ज्ञान का वाहक नहीं, बल्कि बच्चों के चरित्र, व्यवहार और आत्म-संयम के प्रत्यक्ष मॉडल होते हैं। अध्ययनों ने शिक्षक के व्यवहार, संचार शैली और भावनात्मक समर्थन को विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सामाजिक व्यवहार और वैचारिक रुझान के निर्धारण में महत्वपूर्ण बताया है। ये सिद्धांतात्मक लेख यह भी रेखांकित करते हैं कि स्कूल वातावरण, शिक्षक की अपेक्षाएँ और शिक्षण-शैली व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास (सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक) के लिए प्लेटफार्म प्रदान करते हैं। यह पायलट स्टडी में गुणात्मक साक्षात्कार और अवलोकन के निष्कर्षों के साथ सहज मेल खाता है, जहाँ शिक्षक-छात्र संबंध और शिक्षण व्यवहार ने व्यक्तित्व संकेतकों को प्रभावित किया। AIIR Journal+1

2. शिक्षक-छात्र व्यक्तित्व सम्बन्ध : गुणधर्म और सीखने के परिणाम : मेटा-विश्लेषण तथा बड़े आकलनों ने दिखाया है कि शिक्षक और छात्र के व्यक्तित्व गुण (जैसे सहानुभूति, उत्तरदायित्व, संचार कौशल) सीखने की गुणवत्ता और शिक्षक-छात्र संबंध की गुणवत्ता से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। अध्ययनों ने यह भी पाया कि शिक्षक की सकारात्मक सामाजिक-भावनात्मक विशेषताएँ (उदाहरण संवेदनशीलता, दृढ़ता) छात्रों के व्यवहार, कक्षा सहभागिता और आत्म-धारणा को बेहतर बनाती हैं। हमारे पायलट डेटा में भी शिक्षक के सहज व्यवहार और सहभागिता-उन्मुख पद्धतियों वाले विद्यालयों में छात्रों की प्रेरणा और आत्म-निर्भरता अधिक दिखाई दी जो इन व्यापक निष्कर्षों का स्थानीय समर्थन प्रस्तुत करता है। PMC+1

3. सांस्कृतिक व भौगोलिक संदर्भ : आदिवासी/मातृभाषा और ग्रामीण शिक्षा के प्रभाव झारखंड जैसे बहुभाषी व आदिवासी बहुल क्षेत्रों में मातृभाषा-आधारित शिक्षण, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील पाठयक्रम और प्रशिक्षित स्थानीय शिक्षकों के योगदान पर हाल की परियोजनाएँ सकारात्मक प्रभाव दिखाती हैं। विशेषकर प्रारम्भिक साक्षरता, आत्म-मूल्यांकन और सांस्कृतिक पहचान के संदर्भ में। ऐसे कार्यक्रम बच्चों के आत्म-सम्मान और सांस्कृतिक पहचाने से जुड़ी पहचान को मजबूत करते हैं, जो व्यक्तित्व विकास के सामाजिक-भावनात्मक आयामों को सकारात्मक बनाते हैं। पूर्वी सिंहभूम जैसे जिलों के संदर्भ में मातृभाषा/सांस्कृतिक अनुकूलता का समावेश पायलट स्टडी के क्षेत्रीय अवलोकन के साथ प्रासंगिकता रखता है। The Times of India+1

4. जिला-स्तरीय वास्तविकताएँ : पूर्वी सिंहभूम के शैक्षिक संकेतक और चुनौतियाँ जिलास्तरीय सरकारी आँकड़े और स्थानीय रिपोर्टें यह संकेत देती हैं कि पूर्वी सिंहभूम में विद्यालयों की संख्या, उपस्थिति दर, और शिक्षकों का अनुपात विविध है । जहाँ कुछ क्षेत्र शिक्षक-कर्मी, उपस्थिति-समस्याएँ व अवसंरचना-खामियों से जूझते दिखते हैं। समाचार और जिला पोर्टल पर प्रकाशित सूचनाएँ भी शिक्षक-अनुपात (teacher & student ratio) और उपस्थिति दर में उतार-चढ़ाव दर्शाती हैं, जो शिक्षक की उपलब्धता तथा उनकी निरंतरता का बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण पर प्रत्यक्ष असर डाल सकती हैं। पायलट अध्ययन में भी संसाधान-खर्च और शिक्षक-उपस्थिति संबंधित मुद्दे गुणात्मक रूप से सामने आए थे। Jamshedpur+2Prabhat Khabar

5. शिक्षक प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव शिक्षक प्रशिक्षण (pre&service और in & service) से जुड़ी सरकारी रिपोर्ट्स और शोध यह बताती हैं कि नियमित पेशेवर विकास, पैर-प्रशिक्षण और

विषयगत प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण शिक्षण पद्धति में नवाचार और कक्षा-प्रबंधन कौशल को बेहतर बनाता है। ऐसे प्रशिक्षण न केवल शैक्षिक परिणाम सुधारते हैं, बल्कि शिक्षक की आत्म-दक्षता तथा छात्रों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की प्रवृत्ति को भी प्रभावित करते हैं, जिसका परिणाम छात्र के सामाजिक-भावनात्मक विकास और सकारात्मक व्यक्तित्व लक्षणों में दिखता है। पायलट स्टडी में रिपोर्ट की गई प्रशिक्षण की कमी (55% शिक्षकों ने संकेत किया) इसी साहित्यिक प्रवृत्ति की पुष्टि करती है।

6. पठनपाठन संसाधान, पाठय-पद्धति और सह- शैक्षिक गतिविधियों का योगदान: अनेक अध्ययनों ने रेखांकित किया है कि पाठय-पुस्तक, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन और सह-शैक्षिक गतिविधियाँ (नाटक, खेल, समूह-प्रोजेक्ट) बच्चों के आत्म-आकलन, नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल और सहकारी व्यवहार को बढ़ाती हैं। यानी व्यक्तित्व के व्यवहारिक व सामाजिक आयामों को संवारती हैं। संसाधनों की अनुपस्थिति पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देती है, जबकि संसाधन-समृद्ध सेटिंग्स में छात्र-केंद्रित, अनुभवात्मक शिक्षण व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देता है। पायलट स्टडी के मात्रात्मक निष्कर्ष (60: सरकारी विद्यालयों में संसाधान अपर्याप्त) इसी साहित्य के निष्कर्षों से मेल खाते हैं।

नीतिगत पहलें, कार्यक्रम और भविष्य के शोध के लिए दिशानिर्देश राज्य तथा केन्द्र सरकार के दस्तावेज और विकास रिपोर्टें (NSDC/JEPC व अन्य) यह सुझाती हैं कि स्थानीय संदर्भानुकूल नीतियाँ, जैसे शिक्षक-भर्ती, क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, मातृभाषा आधारित प्रारम्भिक शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी-समावेशी व्यक्तित्व विकास की दिशा में प्रभावी साबित हो सकती हैं। साहित्य यह भी कहता है कि दूरगामी प्रभाव का आकलन करने हेतु लम्बी अवधि के longitudinal अध्ययन, कंट्रोल्ड प्रायोगिक हस्तक्षेप और क्षेत्रीय सांस्कृतिक वैरायटी पर फोकस आवश्यक है। हमारे पायलट परिणाम नीति-स्तर पर छोटे-विस्तृत हस्तक्षेपों (teacher training] resource allocation] mother&tongue instruction) के प्रभाव का आधार देने के साथ ही आगे के दायरे बद्ध शोध के लिए मार्गदर्शक संकेत देते हैं।

साहित्य से प्रमुख निष्कर्ष और पायलट स्टडी के लिये उपयोगिता

शिक्षक का व्यवहार, प्रशिक्षण और उपलब्धता सीधे बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक और व्यवहारिक व्यक्तित्व संकेतकों को प्रभावित करते हैं। PMC+1

ग्रामीण/आदिवासी संदर्भ में मातृभाषा व सांस्कृतिक संवेदनशीलता व्यक्तित्व के आत्म-सम्मान और सामाजिक पहचान से जुड़ी हुई है। The Times of India

जिला-स्तर की वास्तविकताएँ (शिक्षक-कर्मी, उपस्थिति, संसाधन) स्थानीय हस्तक्षेपों की आवश्यकता को स्पष्ट करती हैं।

समस्या कथन

पूर्वी सिंहभूम जिला सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधताओं से परिपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ सरकारी और निजी विद्यालयों के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। शिक्षक, जो शिक्षा की धुरी हैं, संसाधानों की कमी, प्रशिक्षण अभाव और प्रशासनिक दबाव जैसी चुनौतियों से जूझते हुए भी छात्रों को मार्गदर्शन देते हैं। यह पायलट अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि शिक्षक की शैक्षिक भूमिका बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक व्यवहार, आत्मविश्वास और सीखने की प्रेरणा को किस प्रकार प्रभावित करती है, तथा शैक्षिक असमानताओं के बीच उनकी भूमिका कितनी प्रभावी है।

2. अध्ययन का उद्देश्य :

इस पायलट स्टडी का मुख्य उद्देश्य यह है कि पूर्वी सिंहभूम जिले के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की शैक्षिक भूमिका को समझा जा सके। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उप-उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :

1. बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. पूर्वी सिंहभूम जिले की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में शिक्षक की चुनौतियों की पहचान करना।
3. विद्यालय स्तर पर बच्चों के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल एवं नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षक के योगदान का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों की कार्यपद्धति, शिक्षण शैली और व्यक्तित्व निर्माण की रणनीतियों का मूल्यांकन करना।

3. शोध की आवश्यकता और महत्व

व्यक्तित्व विकास मानव जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। यह केवल शारीरिक या बौद्धिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि भावनात्मक संतुलन, सामाजिक व्यवहार तथा नैतिक मूल्यों के समन्वय से जुड़ा होता है। विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व विकास की भूमिका

और भी अहम हो जाती है, क्योंकि विद्यालय ही वह आधारभूत संस्था है जहाँ बच्चों के चरित्र, सोच, दृष्टिकोण और भविष्य की नींव रखी जाती है। पूर्वी सिंहभूम जैसे जिले में यह आवश्यकता और भी प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि यहाँ सामाजिक असमानता, आर्थिक पिछड़ापन और शैक्षिक संसाधनों की कमी बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाधा उत्पन्न करती है। ऐसे वातावरण में शिक्षक ही बच्चों के लिए आदर्श, मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत का कार्य करते हैं।

इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास होगा कि शिक्षक किस प्रकार बच्चों के व्यक्तित्व विकास में योगदान कर सकते हैं और शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है। सबसे पहले, यह अध्ययन शिक्षण प्रक्रिया में सुधार हेतु ठोस सुझाव उपलब्ध कराएगा। जब बच्चों के सीखने की प्रक्रिया केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर उनके बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास पर केंद्रित होगी, तब शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

दूसरे, यह शोध शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। आज के समय में केवल विषयगत ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, शिक्षकों में सहानुभूति, नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल और बच्चों के साथ भावनात्मक जुड़ाव जैसी विशेषताओं का होना भी अनिवार्य है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकेंगे ताकि शिक्षक बच्चों की बहुआयामी आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर सकें।

तीसरे, नीतिगत स्तर पर इस शोध का विशेष महत्व है। शिक्षा विभाग और नीति-निर्माता यदि बच्चों के व्यक्तित्व विकास को केंद्र में रखकर योजनाएँ बनाएँगे, तो समाज में दीर्घकालीन सकारात्मक बदलाव संभव हो सकेंगे। यह शोध शिक्षा प्रणाली की कमजोरियों और संभावनाओं की पहचान करके नीति-निर्माताओं को नई योजनाएँ बनाने में सहूलियत प्रदान करेगा।

अंततः, इस प्रकार का अधययन न केवल बच्चों के व्यक्तिगत जीवन को संवारने में सहायक होगा, बल्कि सामाजिक समरसता और सामूहिक प्रगति का भी मार्ग प्रशस्त करेगा। इसीलिए व्यक्तित्व विकास एवं शिक्षक की भूमिका पर शोध अत्यंत आवश्यक और सार्थक है।

4. शोध पद्धति (Methodology) इस पायलट स्टडी में शोध की प्रकृति को समझने और प्रारंभिक निष्कर्ष प्राप्त करने के उद्देश्य से वर्णनात्मक शोध पद्धति (Descriptive Research Method) का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह पद्धति अध्ययनाधीन जनसंख्या की वर्तमान स्थिति, व्यवहार और दृष्टिकोण को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में सहायक होती है।

शोध क्षेत्र (Research Area) : अध्ययन का क्षेत्र पूर्वी सिंहभूम जिला, झारखंड निर्धारित किया गया। यह क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक विविधताओं से परिपूर्ण है, जहाँ सरकारी और निजी विद्यालयों की स्थिति एवं कार्यप्रणाली में अंतर पाया जाता है। इस कारण यह क्षेत्र शोध हेतु उपयुक्त माना गया, क्योंकि यह शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार की परिस्थितियों को समेटे हुए है।

नमूना (Sample) नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन (Purposive Sampling) की तकनीक अपनाई गई। इसमें 5 सरकारी विद्यालयों और 2 निजी विद्यालयों को शामिल किया गया। इन विद्यालयों से कुल 20 शिक्षक और 50 छात्रों का चयन किया गया। शिक्षक और छात्र दोनों को शामिल करने का कारण यह था कि अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक परिवेश की बहुआयामी समझ विकसित करना था। शिक्षक अपनी शिक्षण पद्धतियों और अनुभवों के माध्यम से जानकारी प्रदान करते हैं, जबकि छात्र सीखने की प्रक्रिया और विद्यालयी वातावरण पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

डेटा संग्रह के साधन (Tools for Data Collection):

अध्ययन के लिए तीन प्रमुख साधनों का उपयोग किया गया

1. **प्रश्नावली** (Questionnaire) : इसमें खुले और बंद दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल थे, ताकि प्रतिभागियों की राय और अनुभवों को व्यवस्थित रूप से संकलित किया जा सके।

2. **साक्षात्कार (Interview):** चयनित शिक्षकों और छात्रों से व्यक्तिगत एवं समूह साक्षात्कार किए गए, जिससे उनके विचारों की गहन समझ प्राप्त हो सके।

3. **प्रत्यक्ष अवलोकन (Direct Observation):** शोधकर्ता ने विद्यालयों के वातावरण, कक्षा-कक्ष की स्थिति, शिक्षण-पद्धतियों और विद्यार्थियों की सहभागिता का प्रत्यक्ष अवलोकन किया।

इन सभी साधनों के संयोजन से प्राप्त डेटा का विश्लेषण करके शोध के उद्देश्यों की पूर्ति की गई। यह पद्धति न केवल डेटा की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता सुनिश्चित करती है, बल्कि अध्ययन को अधिक व्यापक और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या (गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टिकोण से) इस पायलट स्टडी में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों पद्धतियों के माध्यम से किया गया। इसका उद्देश्य शोध की प्रकृति को गहराई से समझना और प्रारंभिक निष्कर्षों की ओर संकेत करना था।

1. गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Analysis)

गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग प्रतिभागियों (शिक्षकों और छात्रों) के विचारों, अनुभवों और धारणाओं की गहन समझ प्राप्त करने हेतु किया गया।

प्रश्नावली से प्राप्त डेटा- खुले प्रश्नों के उत्तरों का थीमेटिक विश्लेषण किया गया। उदाहरण के लिए, शिक्षकों ने अपनी शिक्षण पद्धतियों में सीमित संसाधनों और समय की कमी जैसी बाधाओं का उल्लेख किया, जबकि छात्रों ने विद्यालयी वातावरण, कक्षा की गतिविधियों और शिक्षक-छात्र संबंधों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए।

साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष- शिक्षकों के साथ किए गए व्यक्तिगत और समूह साक्षात्कारों से यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी और कक्षा में अधिक छात्र होने के कारण शिक्षण पद्धति पर दबाव रहता है, जबकि निजी विद्यालयों में अपेक्षाकृत आधुनिक तकनीक और सुविधाओं का उपयोग देखा गया। छात्रों ने निजी विद्यालयों में अनुशासन और शैक्षिक वातावरण को बेहतर बताया, वहीं सरकारी विद्यालयों के छात्र विद्यालयी ढांचे की समस्याओं की ओर संकेत करते दिखे।

प्रत्यक्ष अवलोकन : शोधकर्ता द्वारा विद्यालयों में किए गए अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में कक्षाओं की भौतिक संरचना कमजोर थी और छात्रों की सक्रिय भागीदारी अपेक्षाकृत कम पाई गई। वहीं शहरी विद्यालयों में शिक्षण-शिक्षण प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित और सहभागितापूर्ण दिखी।

इस गुणात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शैक्षिक परिवेश न केवल भौतिक संसाधनों पर निर्भर करता है, बल्कि शिक्षकों की कार्यशैली और छात्रों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. मात्रात्मक विश्लेषण (Quantitative Analysis)

मात्रात्मक दृष्टिकोण से प्राप्त डेटा का सांख्यिकीय रूप से संकलन और व्याख्या की गई।

नमूना संरचना : 20 शिक्षक और 50 छात्रों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत और आवृत्ति (frequency) के आधार पर विश्लेषण किया गया।

प्रश्नावली के बंद प्रश्न: उदाहरण के लिए, विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण सामग्री की पर्याप्तता पर छात्रों और शिक्षकों से मिले उत्तरों में 60% सरकारी विद्यालयों ने अपर्याप्तता बताई, जबकि 70% निजी विद्यालयों ने इसे संतोषजनक माना।छात्रों की राय 50% छात्रों में से लगभग 65% छात्रों ने विद्यालयी वातावरण को सीखने के लिए प्रेरक माना, जबकि शेष ने अनुशासन और संसाधनों की कमी को एक बड़ी बाधा बताया।

शिक्षकों की प्रतिक्रिया : शिक्षकों में से 55% ने समय-समय पर प्रशिक्षण की कमी पर चिंता व्यक्त की, जबकि 45% ने विद्यालय प्रशासन के सहयोग को अपर्याप्त बताया। इन संख्यात्मक आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकला कि सरकारी और निजी विद्यालयों के बीच संसाधनों, शिक्षण पद्धति और छात्रों की सहभागिता में स्पष्ट अंतर है।

3. संयुक्त व्याख्या (Integrated Interpretation)

दोनों प्रकार के डेटा (गुणात्मक और मात्रात्मक) का समन्वित विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हुआ कि-

1. विद्यालयों का भौतिक और शैक्षणिक ढांचा- निजी विद्यालयों में संसाधन और सुविधाएं अपेक्षाकृत अधिक हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की कमी है।
2. शिक्षण पद्धतियाँ और दृष्टिकोण- सरकारी विद्यालयों के शिक्षक पारंपरिक पद्धतियों पर अधिक निर्भर हैं, वहीं निजी विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग देखने को मिला।
3. **छात्रों का दृष्टिकोण**- छात्र अपने विद्यालयी अनुभवों को सीखने की प्रेरणा से जोड़ते हैं। निजी विद्यालयों के छात्र सीखने की प्रक्रिया को अधिक आनंददायक मानते हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों के छात्र बाधाओं पर बल देते हैं।
4. **सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ**- पूर्वी सिंहभूम जैसे क्षेत्र में शहरी और ग्रामीण परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से भिन्न दिखाई दीं, जिसने शैक्षिक वातावरण को प्रभावित किया।

इस पायलट अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह संकेत देते हैं कि विद्यालयी परिवेश के अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध पद्धति अत्यंत उपयुक्त रही। गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि-

- सरकारी और निजी विद्यालयों में संसाधनों, वातावरण और दृष्टिकोण में अंतर विद्यमान है।
- शिक्षकों और छात्रों दोनों की सहभागिता शैक्षिक गुणवत्ता के आकलन में महत्वपूर्ण है।

- प्रारंभिक निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि शैक्षिक असमानताओं को कम करने के लिए नीतिगत स्तर पर ठोस कदम उठाने आवश्यक हैं।

इस प्रकार, यह विश्लेषण भविष्य के विस्तृत शोध कार्य के लिए आधार प्रदान करता है और शैक्षिक नीति निर्माण में सहायक हो सकता है।

समग्र व्याख्या

इस पायलट अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि-

1. **संसाधन असमानता:** सरकारी विद्यालयों में मूलभूत संसाधनों की कमी है, जबकि निजी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं।
2. **शिक्षण पद्धति :** सरकारी विद्यालयों में पारंपरिक पद्धतियाँ हावी हैं, जबकि निजी विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी साधन उपलब्ध हैं।
3. **छात्रों का अनुभव :** निजी विद्यालयों के छात्र अपने वातावरण को प्रेरक मानते हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों के छात्र समस्याओं पर अधिक ध्यान देते हैं।
4. **शिक्षकों की स्थिति :** प्रशिक्षण और प्रशासनिक सहयोग की कमी सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।
5. **सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव:** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की भिन्न परिस्थितियाँ शैक्षिक वातावरण में स्पष्ट अंतर पैदा करती हैं।

5. **बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका**

शिक्षक का कार्य केवल पुस्तक ज्ञान कराना नहीं है, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, परामर्शदाता और आदर्श के रूप में बच्चों के समक्ष खड़ा होता है। पूर्वी सिंहभूम में शिक्षकों की भूमिका निम्नलिखित आयामों में देखी जा सकती है :

1. **बौद्धिक विकास:** शिक्षक बच्चों की सोचने -समझने की क्षमता को विकसित करते हैं।
2. **सामाजिक विकास:** सामूहिक गतिविधियों और समूह चर्चा से शिक्षक बच्चों को सहयोग, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व सिखाते हैं।
3. **नैतिक विकास:** शिक्षक कहानियों, उदाहरणों और संस्कारों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं।
4. **भावनात्मक विकास:** शिक्षक बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करते हैं और आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।
5. **नेतृत्व क्षमता का विकास :** सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में भागीदारी द्वारा बच्चों को नेतृत्व कौशल विकसित करने के अवसर दिए जाते हैं।

6. **पूर्वी सिंहभूम की विशेष परिस्थितियाँ**

पूर्वी सिंहभूम जिला शिक्षा की दृष्टि से विशेष अध्ययन का विषय है क्योंकि यहाँ अधिकतर बच्चे आदिवासी एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आते हैं। घरों में शिक्षा का वातावरण कम मिलता है। शिक्षक बच्चों को न केवल पढ़ाई बल्कि भाषा (हिंदी, ओड़िया, बंगला, संथाली) की समझ में भी मदद करते हैं। सामाजिक कुरीतियाँ, बाल मजदूरी और गरीबी जैसी बाधाओं को दूर करने में शिक्षक की भूमिका अहम है।

7. **चुनौतियाँ:**

शिक्षकों को इस क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है :

- संसाधनों की कमी (पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेलकूद सामग्री)
- भाषाई विविधता
- अभिभावकों का शिक्षा के प्रति उदासीन दृष्टिकोण
- तकनीकी साधनों की कमी
- बच्चों में आत्मविश्वास और संवाद कौशल की कमी

परिणाम और चर्चा

इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य पूर्वी सिंहभूम जिले के सरकारी और निजी विद्यालयों में शैक्षिक परिवेश, शिक्षक की भूमिका तथा छात्रों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना था। संकलित आंकड़ों का गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार से विश्लेषण करने के बाद जो परिणाम सामने आए, वे इस क्षेत्र की शैक्षिक वास्तविकताओं को उजागर करते हैं।

1. **विद्यालयी वातावरण और संसाधान**

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सरकारी और निजी विद्यालयों के बीच संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग में बड़ा अंतर है। सरकारी विद्यालयों में कक्षा-कक्ष की भौतिक संरचना, फर्नीचर, शैक्षणिक सामग्री और आधुनिक तकनीक की कमी पाई गई। वहीं निजी विद्यालयों में अपेक्षाकृत बेहतर संसाधन उपलब्ध थे।

- लगभग 70% निजी विद्यालयों के छात्रों ने अपने विद्यालयी वातावरण को प्रेरणादायक बताया।
- इसके विपरीत, 60% सरकारी विद्यालयों के छात्रों ने संसाधनों की कमी और कक्षाओं की भीड़भाड़ को सीखने में बाधक माना।

यह अंतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच और अधिक गहराई से देखने को मिला। शहरी निजी विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण साधनों और अतिरिक्त गतिविधियों पर

विशेष ध्यान दिया जा रहा था, जबकि ग्रामीण सरकारी विद्यालय बुनियादी ढांचे की समस्याओं से जूझ रहे थे।

2. **शिक्षक की भूमिका और शिक्षण पद्धतियाँ**

शिक्षक दोनों प्रकार के विद्यालयों में बच्चों के व्यक्तित्व विकास में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

सरकारी विद्यालयों के शिक्षक : सीमित संसाधनों के बावजूद पारंपरिक पद्धतियों पर निर्भर रहते हुए भी बच्चों को धैर्य, सामाजिक सहयोग और व्यवहारिक ज्ञान प्रदान कर रहे थे। निजी विद्यालयों के शिक्षक आधुनिक तकनीकों जैसे स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर और डिजिटल लर्निंग सामग्री का प्रयोग कर रहे थे, जिससे छात्रों की रचनात्मकता और प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला। साक्षात्कार से यह भी सामने आया कि शिक्षक केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि छात्रों को जीवन की चुनौतियों से जूझने का साहस, आत्मविश्वास और सामाजिक मूल्यों का बोध कराते हैं। लगभग 65% छात्रों ने स्वीकार किया कि उनके शिक्षक कठिन परिस्थितियों में प्रेरणा स्रोत बनते हैं।

3. छात्रों का दृष्टिकोण और सहभागिता

छात्रों की प्रतिक्रियाओं से यह ज्ञात हुआ कि विद्यालय का वातावरण उनकी सीखने की प्रक्रिया और व्यक्तित्व निर्माण पर सीधा असर डालता है।

- **निजी विद्यालयों के छात्र :** अपने विद्यालयी जीवन को अनुशासित, रोचक और अवसरों से भरा हुआ मानते हैं। लगभग 75% छात्रों ने कहा कि उन्हें अतिरिक्त गतिविधियों (जैसे खेल, कला, नाटक) में भाग लेने का पर्याप्त अवसर मिलता है।
- **सरकारी विद्यालयों के छात्र:**

उन्होंने शिकायत की कि संसाधनों और अवसरों की कमी के कारण उनकी प्रतिभा अक्सर सीमित रह जाती है। हालांकि, कई छात्रों ने यह भी कहा कि शिक्षक उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह भी देखा गया कि ग्रामीण छात्रों में आत्म-अभिव्यक्ति की कमी थी, जबकि शहरी छात्रों में आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

4. सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताएँ

पूर्वी सिंहभूम जिला सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधताओं से परिपूर्ण है। अध्ययन से पता चला कि इस विविधता का प्रभाव विद्यालयों पर भी पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक और छात्र स्थानीय संस्कृति और परंपराओं से गहराई से जुड़े हुए थे।

शहरी क्षेत्रों में वैश्विक दृष्टिकोण और आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव अधिक स्पष्ट था। यह अंतर छात्रों के दृष्टिकोण और उनके व्यक्तित्व विकास में परिलक्षित हुआ।

5. **चर्चा** - अध्ययन के परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि शिक्षा केवल पाठयक्रम तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का आधार है। निजी विद्यालयों के संसाधन और आधुनिक पद्धतियाँ छात्रों को प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण प्रदान करती हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों का व्यक्तिगत सहयोग और धैर्य बच्चों के जीवन कौशल को मजबूत करता है। हालाँकि, यह भी स्पष्ट हुआ कि सरकारी और निजी विद्यालयों के बीच की असमानताएँ बच्चों के विकास में अंतर पैदा कर रही हैं। इसलिए नीति-निर्माताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे सरकारी विद्यालयों में बुनियादी ढांचे और संसाधानों की कमी को दूर करें।

शिक्षक बच्चों को केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि जीवन की चुनौतियों से जूझने का साहस और कठिन परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता भी प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, जब छात्रों को संसाधनों की कमी या व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तो शिक्षक उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर उन्हें आगे बढ़ने की राह दिखाते हैं। वे छात्रों के भावनात्मक और सामाजिक विकास में एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक बच्चों को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हैं। वे उन्हें सहयोग, सहानुभूति और सम्मान से गुणों का अभ्यास करने के अवसर देते हैं। यह पहलू विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों में देखने को मिला, जहाँ शिक्षक केवल ज्ञान संचारक नहीं बल्कि मूल्य-निर्माता की भूमिका भी निभाते हैं। निजी विद्यालयों के शिक्षक आधुनिक तकनीकों और संसाधनों के माध्यम से बच्चों की रचनात्मकता और प्रतिस्पध र्त्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हैं, वहीं सरकारी विद्यालयों के शिक्षक सीमित साधनों के बावजूद धैर्य, संवेदनशीलता और व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करके छात्रों को जीवन कौशल सिखाते हैं। इस पायलट स्टडी से यह स्पष्ट होता है कि पूर्वी सिंहभूम जिले के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल पाठयक्रम पढ़ाने या परीक्षाओं की तैयारी करवाने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे बच्चों के संपूर्ण जीवन दृष्टिकोण को आकार देने का कार्य करते हैं।

8. निष्कर्ष:

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पूर्वी सिंहभूम जिले के बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका सबसे अधिक निर्णायक है। वे न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि जीवन कौशल, आत्मविश्वास और सामाजिक मूल्य भी विकसित करते हैं। निजी विद्यालयों की तकनीकी प्रगति और सरकारी विद्यालयों की सामाजिक संवेदनशीलता दोनों मिलकर शिक्षा के संतुलित मॉडल की ओर संकेत करती हैं। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि विद्यालयी परिवेश और शिक्षक की शिक्षण शैली बच्चों के आत्मविश्वास, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। पूर्वी सिंहभूम जिले के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका शिक्षा से कहीं आगे बढ़कर एक मार्गदर्शक, प्रेरक और जीवन-निर्माता की है। उनका योगदान बच्चों के भविष्य को आकार देने के साथ-साथ समाज में उत्तरदायी नागरिक तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ ग्रथ सूची :

1. सरकार, एस., एवं दत्ता, आर. (2024): शिक्षक की प्रभावशीलता और बिग फाइव व्यक्तित्व गुण संबंधित शोध की समीक्षा। TWIST] 19(1), 558–565
2. प्रकाश, एस. एवं अमलादोस, एस. (2016): शिक्षक शिक्षा संस्थानों की भूमिका- छात्र-शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास में योगदान। मणोन्मनियम सुन्दरनार विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. शर्मा, के. (2018): शिक्षक की भूमिका और छात्र व्यक्तित्व निर्माण। शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 12(3), 45-52.
4. खत्री, एम. बी. (2011): छात्रों के सीखने में शिक्षक का व्यक्तित्व। काठमांडू विश्वविद्यालय (M.Phil शोध प्रबंध)।
5. वर्मा, आर. (2019): शिक्षक-छात्र संबंध और सीखने के परिणाम।भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका,34(2), 89-102।
6. सिंह, पी. (2020): ग्रामीण शिक्षा और शिक्षक की भूमिका। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 58(1), 101-115।
7. गुप्ता, एन. (2017): शिक्षक प्रशिक्षण और व्यक्तित्व विकास। समकालीन शिक्षा जर्नल, 5(4), 223-236।
8. शिक्षक का छात्र व्यक्तित्व विकास में योगदान। (2016): मनोविज्ञान एवं व्यवहार विज्ञान अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 2(1),55-61।
9. कुमार, ए. (2015): बच्चों में व्यक्तित्व विकास हेतु शिक्षक की शैक्षिक भूमिका। शैक्षिक मनोविज्ञान शोध पत्रिका, 7(2), 110-119।
10. सिंह, वी. (2018): पूर्वी भारत में शिक्षा और शिक्षक की सामाजिक भूमिका। पूर्वोत्तर शिक्षा अध्ययन, 22(3), 75-84।
11. पाण्डेय, आर. (2016): विद्यर्थियों में आत्मविश्वास निर्माण में शिक्षक की भूमिका। मानव विकास समीक्षा, 14(2), 95-106।
12. मिश्रा, एस. (2019): शिक्षक की भावनात्मक भूमिका और बाल व्यक्तित्व। समाजशास्त्रीय अध्ययन पत्रिका, 11(1), 65-78।
13. यादव, ए. (2021): सह-शैक्षिक गतिविधियाँ और शिक्षक का मार्गदर्शन। भारतीय शिक्षा शोध जर्नल, 19(2), 130-142।
14. शिक्षक और व्यक्तित्व विकास एक मेटा विश्लेषण (2022): फॉटियर्स इन साइकोलॉजी, 13, 122-134।
15. गुप्ता, डी. (2017): शिक्षा में व्यक्तित्व विकास का महत्व। भारतीय सकारात्मक मनोविज्ञान पत्रिका, 8(1), 55-66।
16. तिवारी, जे.(2018): बच्चों के व्यक्तित्व में शिक्षक का योगदान- एक गुणात्मक अध्ययन। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, 10(3),150-162।
17. शिक्षक और छात्र का भावनात्मक सम्बन्ध। (2020). फॅटियर्स इन एजुकेशन, 5, 210-223।
18. झा, बी. (2019): पूर्वी सिंहभूम में विद्यालयी चुनौतियाँ और शिक्षक की भूमिका। झारखंड शिक्षा अध्ययन, 6(2),45-59।
19. सिंह, एम. (2017): शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ और व्यक्तित्व निर्माण। शैक्षिक संवाद,9(4), 300-314।